ISSN - 2229 - 4929

अक्षर वाङ्मय

४ मार्च २०२०

नारी विमर्श

विशेषांक

संपादक

डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी

अ.क्र.	पेपर का विषय	लेखक का नाम	पेज क्र.
18.	शापित जीवन का जीवंत दस्तावेज : दोहरा अभिशाप	डॉ. अलका निकम वागदरे	081
19.	नारी विमर्श - बिना दीवारों के घर के संदर्भ मे	आशा श्यामराव इंगवले	085
20.	ठीकरे की मंगनी उपन्यास और नारी	माधुरी प. कांबळे	088
21.	जया जादवानी की कविताओं में नारी विमर्श	डॉ. प्रवीणकुमार न. चौगुले	092
22.	समकालीन हिंदी कविता में स्त्री – विमर्श	डॉ. बलवंत जेऊरकर	097
23.	हिंदी महिला कहानीकारों की रचनाओं में नारी विमर्श	डॉ. वर्षा गायकवाड	101
24.	आधुनिक हिंदी लेखिकाओं के उपन्यासों में नारी-विमर्श	डॉ. वृषाली विकास मिणचेकर	105
25.	वर्तमान समाज और स्त्रीवाद की आवश्यकता	संजय मानसिंग राठोड	109
26.	संघर्षशील नारी की अधूरी कहानी: 'सिरी उपमा जोग के संदर्भ में'	संतोष तुकाराम बंडगर	114
27.	आधुनिक हिंदी उपन्यासों में चित्रित स्त्री विमर्श (विशेष उपन्यासों के संदर्भ में)	डॉ. रीना पाटील–खिचडे	117
28.	'अंततः' महानगरीय नारीका अंर्तव्दंव्द	डॉ. कल्पना किरण पाटोळे	123
29.	स्त्री विमर्श : अस्मिता की तलाश	वर्षा लिंबराज कांबळे	127
30.	'हिंदी साहित्य और स्त्री विमर्श'	स्मिता अभिजीत वणिरे	132
31.	पुरुष की मानसिकता में नारी : देह, मशीन और व्यक्तित्व	रूपाली प्रशांत भोसले	136
32.	हिंदी उपन्यास में नारी विमर्श	लक्ष्मी बाकेलाल यादव	140
33.	बीसवीं सदी के काव्य में नारी वर्णन	कैलासकुमार गुंडोपंथ पाटील	146
34.	हिंदी साहित्य में नारी विमर्श	सचिन करचे	149
35.	'दस द्वारे का पिंजरा' उपन्यास में नारी विमर्श	सविता बळीराम राठोड	153
36.	चित्रा मुद्गल तथा मैत्रयी पुष्पा की कहानियों में चित्रित स्त्री संसार	डॉ.शोभा एम.पवार	156
37.	नारी विमर्श : अवधारणा तथा सिध्दांत	नयन भादुले –राजमाने	160
38.	आधुनिक भारतवर्ष और नारी जीवन	आमोल ज्ञानोबा लांडगे	164
39.	हिंदी साहित्य में नारी विमर्श	डॉ. येल्लुरे एम.ए.	168
40.	सुमित्रानंदन पंत के काव्य में नारी अस्मिता	डॉ. भास्कर उमराव भवर	171

अक्षर वाङ्मय : ISSN : 2229-4929

नारी विमर्श : अवधारणा तथा सिध्दांत

नयन भादुले -राजमाने
गोविंदलाल कन्हैयालाल जोशी (रात्रीचे) वाणिज्य महाविद्यालय, लातूर

प्रस्तावना :

नारी विमर्श और दलित -विमर्श हमारे यहाँ नई संकल्पना हैं। प्राचीन काल से भारतीय समाज में नारी और दलित शोषित पीडित हैं। स्वातंत्र्योत्तर काल में भी सामाजिक सांस्कृतिक और साहित्यिक क्षेत्र में नारी और दलित हासिए पर ही रहे हैं। युरोपीय नवचेतना से प्रभावित समाज सुधारकों के प्रयास और नारी शिक्षा के परिणाम स्वरूप भारतीय स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन आ रहा हैं। इस दृष्टि से बीसवीं सदी के अंतिम दो दशक जिस तरह सामाजिक, राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय दृष्टिसे महत्त्वपूर्ण रहे हैं। उसी तरह साहित्यिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण रहे हैं। यातायात के साधनों में तेजी से वृध्दि, संचार साधनों का विस्फोट, वैश्विकरण, उदारीकरण, नीजीकरण के बढते माहोल के कारण हमारा सामाजिक जीवन जिस प्रकार प्रभावित हुआ है उसी प्रकार साहित्य जगत भी प्रभावित हुआ है। विशेष रूप से नारी लेखन इन दो दशकों में उभरकर सामने आया हैं। इस लेखन का महत्त्वपूर्ण लक्ष रहा है नारी विमर्श। शिक्षा, सामाजिक सुधार तथा पश्चिमी विचारों के प्रभाव स्वरूप नारी समाज में जागरुकता, संवेदना एवं नई चेतना का उदय हुआ जिसका प्रभाव विगत दो दशकों के नारी लेखन में प्रखर रूप से दिखाई दे रहा है।

भारतीय परंपरा में पति, पत्नी का अर्धांग है और पत्नी पति का। दोनों मिलकर ही संपूर्णता को प्राप्त करते हैं। तथ्य यह है कि, दोनों का साथ सामंजस्यपूर्ण होता है तो पुष्टि, तृष्टि तथा सृष्टि का निर्माण होता है । यहाँ नारी विमर्शीय चिंतन द्वारा यह विचार कर लेना है कि, क्या नारी पुरुष का जीवन भिन्न-भिन्न है या पुरुष ने मात्र अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए उसे अपने अधीन बनाकर रखा है। आवश्यकता है कि सामाजिक हित को सामने रखते हुए पुरुष और स्त्री दोनों के पारस्पारिक जीवन पर ठीक ढंग से विचार कर लिया जाए।

वर्तमान समय नारी की सक्षमता और योग्यता का परिचायक है। आज की स्त्री अपने कैरियर को लेक चिंतित है। तथा परिवार भी उनका साथ दे रहा है। इन सारी स्थितियों तथा वास्तिकताओं को आज की महिला कहानीकार अपने लेखन के केंद्र में रख रही हैं। लडकियों में लगन, अध्ययन की क्षमता और कार्य की जिम्मेदारी बढी है। इसी कारणवश पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ अधिक कार्यरत दिखाई देती हैं। अत: यहाँ हम पहले नारी -विमर्श की अवधारणा को समझ लें।

नारी-विमर्श एक प्रगतिशील विचार है जो एक ही समय में पूरी दुनिया से जुडा हुआ है। यह वर्तमान समय का विमर्श है। इस पर पश्चिम के नारी मुक्ति आंदोलन का असर है। आंदोलन के रूप में आया हुआ विमर्श मूल में नारीवाद के रूप में उभरकर आया था। इक्कीसवी सदी के आरंभ में तथा बीसवीं सदी के अंतिम दशकों में स्त्रियों के प्रश्नोंपर विश्वभर के बुध्दिजीवियों, समाज सुधारकों तथा राजनीतिज्ञो में चर्चा शुरू हुई। भारत में स्त्रियों की दशा को लेकर म. ज्योतिबा फुले तथा राजा राममोहन राय क्रियाशील थे। न केवल भारत में अपितु विश्वभर में नारी की

अवस्था को लेकर इसी काल में अर्थात उन्नीसवीं शती में चिंतन शूरू हो जाता है। युरोप में भी इसकी शुरूवात कार्लमार्क्स हुआ शुरू हो जाती है। पश्चिम में यह नारीवाद अत्यंत सक्रिय रूप में रहा है। वहाँ नारी-मुक्ति आंदोलन की शुरूआत सन 1920 में समान अधिकार के मुद्दे को लेकर हुई जो बाद में नोकरी के क्षेत्र में, कानूनी संबंधो में तथा सांस्कृतिक प्रथाओं के साथ साथ घेरेलू कार्यकलापों में भी एक परिवर्तनवादी आंदोलन के रूप में उभरकर आई। अत: हम कह सकते हैं कि, नारीवाद अपने प्रथम रूप में नारी पुरुष के औपचारिक समानता की समस्या को लेकर आता है।

आंदोलन का दूसरा रूप वर्ष 1960 में उभरकर आया है। उस समय नारी-मुक्ति समस्या को आर्थिक, राज़नितिक, मनोवैज्ञानिक तथा संस्कृति के स्तर पर उठाया गया। इस प्रकार आंदोलन का एक कदम पितृसत्ताक समाज के विरोध में उठाया गया। इसमें सीमोन द बोउवार, फायर स्टोन, जर्मन ग्रियर के मिलेट तथा जे मिचैल आदि नारीवादी विचारकों के लेखन को महत्वपूर्ण माना जाता है।

नारी विमर्श ने उन पितृक मूल्यों, वर्जनाओं मापदंडो पर जबरदस्त संदेह करते हुए उनपर प्रश्नचिन्ह लगाते हुए आपत्तियाँ उठाई है और उसे समस्याग्रस्त बनाया है। ऐसे तीखे प्रश्नोंने स्त्री विमर्श की सार्थकता, प्रासंगिकता को इसलिए भी और बढा दिया है। क्योंकि वे दुनिया की आधी आबादी के स्वत्व से जुडे हुए मुद्दे हैं। पितृक सताने ही दुनिया की आधी आबादी करे अपना उपनिवेश बनाया है तथा उन्हें आत्महीन, सत्वहीन, वाणीहीन भी किया है। नारी विमर्श ने सदियों से चली आ रही स्वत्वहीनता, खामोशी को तोडा है तथा अपनी चुप्पी को गहरे मानवीय अर्थ दिए है। हाशियों की दुनिया को तोडा है। यही नारी विमर्श की भूमिका है। नारी विमर्श के मानवीय सरोकर हैं। इसलिए, वर्चस्वशाली संस्कृति चिंतित है तथा नारी विमर्श के मानवीय प्रश्नों की उपेक्षा कर रही है। यह केवल नारीयों का ही विषय नहीं हैं। आधी दुनिया का अस्तित्व, उसकी अस्मिता, उसका भविष्य एवं उसके सरोकार इससे जुडे हुए है। इसलिए अपने स्वत्व के प्रति जागरूक स्त्रियाँ इस विमर्श को प्रखर बना रही है। नारी विमर्श ने ही हमें पितृसत्ताक मूल्यों, दोहरे नैतिक, मानदंडो, अंतर्विरोधों को समझने, पहचानने की अंत दृष्टियाँ प्रदान की है। सीमोन द बोउवार, केट मिलट, बैरी फरीडन, इरी गैरो, देरिदा, लाकाने नारीपाठ के प्रश्न को उठाकर विश्व चिंतन में एक नई बहस को जन्म दिया, पितृक मूल्यों को पहली बार समस्याग्रस्त ठहराया। उनपर संदेह करते हुए प्रश्नचिन्ह लगाये हैं। तथा नारी विमर्श को सामने रखा है।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में नारी आंदोलन 19 वीं शताब्दी से शुरू हो चुका था। कई महिला समर्थकों ने स्त्रियोंके लिए विद्यालय की स्थापना की। बाद क.ी स्थितियों में कानूनी सुधारों द्वारा स्त्रियों के संपत्ति संबंधी, वैयक्तिक अधिकारों तथा तलाक देने की स्वीकृती ने स्त्रियों की स्थिती में परिवर्तन ला दिया। 19 वीं शताब्दी के सुधारकों में थे- राजाराम मोहनराय, केशवचंद्र सेन, तथा स्वामी दयानंद जैसे अनेक विचाराकोंने स्त्री शिक्षा तथा अन्य समस्याओं के समाधान में योगदान दिया। धीरे धीरे बीसवीं सदी में हुए पश्चिमी नारी-मुक्ति आंदोलन का प्रभाव हिंदी के साहित्य और समाज पर भी पडने लगा। इसके बाद उपन्यास, कहानी, नाटक तथा कविता में नारीवाद एक विमर्श के रूप में चर्चा तथा लेखन का विषय बना जिसे भारतीय परिपेक्ष्य में नारी विमर्श नाम दिया गया। मृदुला गर्ग ने इसी विचारधारा को स्पष्ट करते हुए कहा है कि, "नारी विमर्श को हमारे यहाँ नारीवादी विमर्श के रूप

में लिया जाता है। भारत में नारी-विमर्श नारीवादी विमर्श का लघुसंस्करण है। यह विमर्श अगर नारीवादी है तो वह सीधा-साधा पुरुष के बीच के संबंध, संघर्ष और अन्याय से संबंध रखता है।"[1] वैसे भी नारीवादी पहले एक आंदोलन के रुप में आया और धीरे-धीरे हम व्यवहार के विमर्श तक पहँुचे। विमर्श का स्वर भी विरोध का, अधिकार का, स्वतंत्रता का तथा पितृसत्ताक समाज के अन्याय एवं शोषण के प्रति विद्रोह का रहा है। अत: हिंदी कहानी में महिला रचनाकारों ने अपनी कहानियों का चित्रण स्त्री जीवन के इन बिंदूओं को लेकर भी किया हुआ परिलक्षित होता है।

नारी विमर्श की परिभाषा :

इक्कीसवी सदी में नारी-विमर्श एक स्वतंत्र विकसित विमर्श के रुप में पहचाना जा रहा है। स्त्री-विमर्श में मूलत: दो शब्द आधारभूत हैं। नारी और विमर्श अर्थात यह एक ऐसा विमर्श है जो नारी संबंधी सारी चर्चाओं को लेकर चलता है। इसलिए विमर्श के अर्थ को यहाँ देख लेना आवश्यक होगा। यहाँ विमर्श का अर्थ है-

1) " विचार, विवेचन 2) परीक्षण 3) समीक्षा 4) तर्क"[2]

वर्तमान समय में नारी-विमर्श की चर्चा मन से लेकर देह तक हो रही है। इसमें नारी के समग्र व्यक्तित्व का प्रश्न उठाया जाता है।

"दैहिक विमर्श में जाए बिना और देह को जगाए बिना स्त्री को पढा जा सकता है और न ही स्त्रीत्ववाद को समझा जा सकता है।"[3]

यह एक पश्चिम से आयात किया हुआ विचार है जो वहाँ के आंदोलन के फलस्वरुप उभरकर आया है, तथा इसे भारतीय रचनाकारों ने अपने-अपने ढंग से देखा है। इस तरह कह सकते है कि नारी विमर्श एक व्यापक संकन्पना है जो नारीवाद के एक अंग के रूप में उभर कर आता है।

वर्तमान समय में नारी विमर्श को शास्त्र के रूप में भी अपनाया जा रहा है। मृणाल पांडे इसे दर्शन के रूप में देखती हैं, - "आज नारीवाद हमारे यहाँ एक अपरिचित या त्याज्य दृष्टिकोण नहीं, बल्कि एक सार्थक स्वीकृत समग्र दर्शन के रूप में स्वीकार्य हो चला है।"[4]

इस प्रकार उपयुर्क्त परिभाषाओं को देखने के बाद कह सकते हैं कि नारी विमर्श पितृसत्ता के हिंसक व्यवहार, प्रहार, दुव्यर्वहार करनेवाली मानसिकता पर विचार करता है। मेरी दृष्टि में नारी विमर्श की समग्र परिभाषा इस प्रकार से हो सकती है- 'नारी विमर्श नारी के मूल बदलाव पर विचार करता है। अर्थात नारी विमर्श एक पूर्ण व्यक्तित्व -विमर्श है।'

नारीवादी सिध्दांत, सैध्दांतिक या दार्शनिक क्षेत्रों में नारीवाद का विस्तार है। नारीवादी सिध्दांत का लक्ष्य लैंगिक असमानता को समझना है और लैंगिक राजनीति, शक्ति संबंधों और लैंगिकता पर ध्यान केंद्रित करना है। इन सामाजिक और राजनीतिक संबंधों की आलोचलना करते हुए, नारीवादी सिध्दांत का ज्यादातर हिस्सा महिलाओं के अधिकारों और हितों को बढावा देने पर केंद्रित है। नारीवादी सिध्दांत में खोजे गए विषयों में भेदभाव, रूढिवादिता, वस्तुनिष्ठता, उत्पीडन और पितृसत्ता शामिल हैं। साहित्यिक आलोचना के क्षेत्र में, ऐलेन शोलेटर ने तीन चरणों वाले नारीवादी सिध्दांत के विकास का वर्णन किया है। पहले वह "नारीवादी आलोचना"

कहती है, जिसमे नारीवादी पाठक साहित्यिक घटनाओं के पिछे की विचारधाराओं की जांच करती है। दूसरे को "शॉल्डर गाइनोक्रिटिसिज्म" कहती है, जिसमे, "महिला पाठात्मक अर्थ की निर्माता है।" आखिरी चरण को वे "लिंग सिध्दांत" कहती है, जिसमें "वैचारिक शिलालेख और यौन। लिंग प्रणाली के साहित्यिक प्रभाव का पता लगाया जाता है।"[5]

अतत: यही लगता है कि, पश्चिम का नारीवाद तथा भारतीय परिवेश पर उभरा स्त्री-विमर्श विचार की दृष्टिकोण से साम्य तो रखता है किंतु दोनों की स्थितियों एवं परिवेशगत चिंतन में अभिव्यक्ति के स्तर पर भेद दृष्टिगोचर होता है। यहाँ आक्रमकता का स्वर इतना तीव्र एवं कटाक्षपूर्ण नहीं है। हिंदी का नारी विमर्श एक समन्वयवादी दृष्टिकोण को लेकर चलता है। यहाँ नारी-जीवन के विविध आयाम खुल रहे हैं।

संदर्भ :

१. सं. प्रभाकर श्रौंतिय, नया ज्ञानोदय, पृ. 42

२. स. हरदेव बहारी, राजपाल हिंदी शब्दकोशा, पृ. 751

३. सं. राजेंद्र यादव 'हंस', सुधीश पचौरी के लेख से, जनवरी-फरवरी 2000, पृ.159

४. मृणाल पांडे, परिधि पर स्त्री, पृ. 47

5. Showalter, Elaine, (1979), "Towards a Feminist Poetics" Jacobs M. (ed.) Women writing about women. croom helm page. 25, 36

RNI-NO : 37218-2010 ISSN - 2229 - 4929
Post Registration No : Akshar-vangmay-L-2/67/RNP/OSD-266/2011-2013

नॅक 'ए' ग्रेड

Estd. 1919

शताब्दी महोत्सव सन १९१९ - २०१९

Book-Post

प्रति,

_____

_____

_____

_____

प्रेषक,

डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी, 'प्रणव' रुक्मेनगर, थोडगा रोड, अहमदपूर, जि. लातूर-४१३५१५

अक्षर वाङ्मय हे मासिक कल्पना मल्टीटेक, ४६१/४, सदाशिव पेठ, टिळक रोड, पुणे-४११०३० येथे मुद्रित करुन प्रकाशक रेखाताई नानासाहेब सूर्यवंशी यांनी प्रतीक प्रकाशन, 'प्रणव' रुक्मेनगर, थोडगा रोड, अहमदपूर, जि. लातूर-४१३५१५ येथे प्रकाशित केले.